दिनांक 07-05-2020

कालेज का नाम - मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम डॉ. फारूक आजम (अतिथि शिक्षक

स्नातक - प्रथम खंड (कला)

विषय- प्राचीन इतिहास

इकाई - पाँच

पत्र - एक

अध्याय - उत्तर वैदिक धर्म

यजुर्वेद - यह एक गद्य ग्रंथ है। इस ग्रंथ में यज्ञ की विधियों पर बल दिया गया है। इस वेद को दो भागों में है। कृष्ण यजुर्वेद तथा शुक्ल यजुर्वेद। कृष्ण यजुर्वेद से संबंधित संहिता में काठक संहिता (कठ संहिता) मैत्रायिणी संहिता एवं तैतरीय संहिता है जबकि शुक्ल यजुर्वेद से वाजसनेई संहिता संबद्ध है।

यजुर्वेद से संबंधित पुरोहित अध्वर्यु था वह इसका

पाठ भी करता था तथा साथ ही कुछ हस्तकार्य भी करता था चौथा पुरोहित ब्रह्मा था जो यज्ञ का निरीक्षण करता था और देखता था कि मंत्रो का उच्चारण हो रहा है अथवा नही।
शुक्ल यजुर्वेद में 40 अध्याय हैं। प्रत्येक का संबंध किसी न किसी याज्ञिक अनुष्ठान से है। इसका अंतिम अध्याय इषोपनिषद है जिसका संबंध आध्यात्म से है।
शुक्ल यजुर्वेद में केवल मंत्रो का संग्रह है। मध्यन्दिन तथा काण्व इसकी मुख्य शाखा है जबकि कृष्ण यजुर्वेद में मंत्र तथा गद्यात्मक वाक्य है।
ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद को वेदत्रयी के नाम से जाना जाता है।
अथर्ववेद - यह निचले प्रकार की संस्कृति से जुड़ा हुआ था अतः इसे वह प्रतिष्ठा प्राप्त नही थी जो अन्य वेदो को प्राप्त था। मात्र अथर्ववेद को वेदत्रयी से बाहर रखा गया है। इसका कारण है कि पहले के तीनों वेदो का संबंध वैदिक

ऋचों में था। जबकि अथर्ववेद में तंत्र-मंत्र संकलित थे।
इस वेद में तत्कालीन भारतीय औषधि तथा विज्ञान संबंधी जानकारी भी है। इसमें अंग तथा मगध जैसे पूर्वी क्षेत्रों का उल्लेख हुआ है। अथर्ववेद में मगध के लोगों को व्रात्य कहा गया है। यहाँ के ब्राह्मणों को भी निचले दर्जे का स्थान मिला है।
अथर्ववेद में 20 काण्ड 731 सूक्त तथा 5987 मंत्रों का संग्रह है। इसमें लगभग 200 मंत्र ऋग्वेद के हैं
अथर्ववेद की दो शाखायें हैं। शौनक तथा पिप्पलाद।
अथर्ववेद में सभा तथा समिति दोनों को पृथक संस्थाओं के रूप में घोषित किया गया है।
शल्य क्रिया का उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है।
अथर्ववेद में मवेशियों की वृद्धि के लिए प्रार्थना की गई है।

Scanned with CamScanner

ब्राह्मण - यौगिक ग्रंथ है। इसमें यज्ञ का अनुष्ठान महत्व दर्शाया गया है। कुछ महत्वपूर्ण ब्राह्मण वेदों से जुड़े हैं। उदाहरण के लिये ऐतरेय और कौषितकी ब्राह्मण ऋग्वेद से पंचविंश तथा षड्विंश, जैमनीय तथा छांदोग्य सामवेद से, तैत्तरीय ब्राह्मण कृष्ण यजुर्वेद से एवं शतपथ ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेद से संबंधित है। पंचविंश ब्राह्मण को ताण्ड्य ब्राह्मण भी कहा जाता है गोपथ ब्राह्मण अथर्ववेद से संबंधित है।

छांदोग्य ब्राह्मण में जन्म तथा विवाह से संबंधित अनुष्ठान तथा देवताओं की स्तुतियाँ संकलित है।

उपनिषद:- उपनिषद का अर्थ है वह शास्त्र या विद्या जो गुरु के निकट बैठकर एकांत में सीखी जाती है। उपनिषद ज्ञान पर बल देता है एवं ब्रह्म तथा आत्मा के संबंधों का निरूपित करता है। उपनिषद की रचना की परम्परा मध्य

काल तक जानकारी रही है। दारा शिकोह के लिए फारसीय

सिर्र अकबर के काल में लिखा गया है। उपनिषदों की

एक बड़ी संख्या का फारसी में उल्लेख मिलता है।

मुक्तिका उपनिषद के अनुसार कुल 108 उपनिषद हैं।

शंकराचार्य द्वारा ग्यारह उपनिषदों पर टीकाएं लिखी

गयी। 108 उपनिषदों में से 12 उपनिषद अधिक महत्व के

हैं। इनमें से ऋग्वेद से संबंधित उपनिषद - ऐतरेय तथा कौषीतकी

सामवेद से संबंधित उपनिषद छान्दोग्य तथा केन

कृष्ण यजुर्वेद - तैत्तिरीय कठ, श्वेताश्वतर मैत्रायिणी

शुक्ल यजुर्वेद - बृहदारण्यक तथा ईश

अथर्ववेद - मुंडक, मांडूक्य और प्रश्न उपनिषद

उपनिषदों को वेदान्त भी कहा जाता है। सबसे बड़ा

ईशा, मांडूक्य उपनिषद छोटा है।

केन तथा प्रश्न उपनिषद के कुछ भाग गद्य तथा

कुछ भाग गद्य में है।

ऐतरेय कौषीतकी, छांदोग्य तैत्तरीय, मैत्रायिणी, बृहदारण्यक तैत्तरीय ऐतरेय मांडूक्य उपनिषद गद्य में है। पी० एल० भार्गव नामक विद्वान ने उपनिषदों की क्रमावली बनाई है।

① मूल रूप से ब्रह्म सिद्धान्त का उल्लेख करने वाले बृहदारण्यक, तैत्तरीय, ऐतरेय, कौषतिकी, केन तथा ईश उपनिषद सबसे प्राचीन है।

② सांख्य शब्दों की जानकारी तथा विष्णु के प्रति झुकाव के कारण कठ उपनिषद उसके बाद का है

③ श्वेताश्वर उपनिषद में परमात्मा को रुद्र कहा गया है। इस आधार पर उसे कठ उपनिषद के बाद का माना जाता है।

④ मैत्रायिणी उपनिषद में त्रिमूर्ति तथा चार आश्रमों के सिद्धान्त का उल्लेख है साथ ही इसमें पहली बार निराशावाद के तत्व मिलते है। अतः इसे सबसे बाद का उपनिषद माना जाता है

नृसिंह पूर्वतापनी उपनिषद सम्भवतः सबसे प्राचीन उपनिषद था।

मुंडकोपनिषद में यज्ञ की तुलना फूटे हुए नाव से की गई है। वहीं से प्रसिद्ध उक्ति सत्यमेव जयते को लिया गया है।

आरण्यक:- आरण्यक मंत्रों का गूढ़ एवं रहस्यवादी अर्थ बताता है। इसका पाठ एकांत एवं वन में ही संभव है यह तप पर बल देता है।

वैदिक शिक्षा - उत्तर वैदिक काल में पाठ्यक्रम में कर्मकांड के साथ-साथ व्याकरण एवं दर्शन जैसे लौकिक विषयों को भी शामिल किया गया है।

ज्ञान के दो प्रकार थे। पराविद्या (Metaphysic) यानि उच्च या आध्यात्मिक ज्ञान तथा अपरा विद्या (लौकिक ज्ञान)

लौकिक ज्ञान के साधन चार वेद तथा छः वेदांग माने जाते हैं

इसके अतिरिक्त जैसा कि छांदोग्य उपनिषद में चर्चा की गई है। कुछ विषय निम्नलिखित थे।